क्षा *f.* (ut mihi videtur, e क्ष्मा, ejecto म्) terra *in dial. vêd.* Rigv. 196. 10.

क्षात्र (a क्षत्र s. अ) *cschatricus*, militaris, regius. Bh. 18. 43.

क्षान्त (r. क्षम् s. त, gr. 616.) 1) tolerans, patiens. Ragh. 18. 8. 2) *n.* patientia. R. Schl. I. 34. 32.

क्षान्ति *f.* (r. क्षम् s. ति) patientia. Bh. 18. 42.

क्षाम (r. क्षै s. म pro त vel न) 1) emaciatus, macer. Bhar. 1. 63.: क्षुधाक्षाम· Up. 27. 2) tenuis, gracilis. Bhar. 1. 92. 3) debilis. Lass. 11. 14.

क्षार *m.* (r. क्षर् s. अ) vitrum. Am.

1. क्षि 1. *P. A.* 1) perire. *Caus.* destruere, perdere, delere. Bh. 4. 30.: यज्ञक्षपितकल्मष (Schol. नाशित); Ram. III. 60. 47.: कृत्स्ने वै क्षयिते पुण्ये (क्षयित pro क्षायित, sicut चयित pro चायित, gr. 521.) 2) regere, dominari, *unde* क्षित्, *q. v., et in dialecto vêdicâ* क्षय dominans, *in composito* उरुक्षय = εὐρυκρείων, *v. Ros. ad Rigv.* p. 11.; *simplici* क्षय respondet zend. 𐬑𐬱𐬀𐬫𐬀 *csahya*, gr. comp. 48. (Ad क्षयामि rego, dominor Rosenius l. c. apte trahit gr. κρείων, ita ut comp. εὐρυκρείων utraque compositi parte cum उरुक्षय conveniat; ष् enim antecedente क् saepius in *r* transiit, v. क्षपस्.)

2. क्षि 5. et 9. *P.*: क्षिणोमि, क्षिणामि laedere, vexare, occidere. Ur. 18. 16.: मनो मे पञ्चबाणः क्षिणोति· Man. 2. 100.: अक्षिण्वन् योगतस् तनुम् (Schol. अपीडयन्); 8. 196.: अक्षिण्वन् न्यासधारिणम्· - *Pass.* क्षीये perdi, deleri, destrui, perire. Man. 7. 112.: राज्ञाम् प्राणाः क्षीयन्ते; Hit. कायः क्षीयमाणो लक्ष्यते· (Laudatae passivae formae etiam ad cognatam radicem क्षी trahi possent, a quâ e gramm. r. 495. *Pass.* τοῦ क्षि non differt. Cf. क्षिण्, क्षण्.)

c. सम् *in Pass.* id. Dev. 3.: सङ्क्षीयमाणे स्वसैन्ये·

3. क्षि 6. *A.*: क्षियामि habitare, v. क्षय·

क्षिण् 8. *P.*: क्षिणोमि (हिंसायाम् *K.* वधे *V.*) laedere, occidere. (Cf. क्षण् unde क्षिण् attenuato अ in इ ortum esse videtur, nisi verbum क्षिणोमि re verâ idem est ac क्षि cl. 5.)

क्षित् *m.* (r. क्षि s. त् gr. 643.) dominus, imperator, *in fine compp.* N. 2. 20. 5. 4.

क्षिति *f.* (r. क्षि habitare s. ति) 1) habitatio, domicilium. 2) terra. Bhar. 3. 5.

क्षिद् v. क्ष्विद्·

1. क्षिप् 6. *P.* 1) jacere, conjicere, mittere, *cum locat. loci, quo alqd. conjicitur.* Ram. I. 28. 22. 23.: अस्त्रम्... चिक्षेप परमक्रुद्धो मारीचोरसि राघवः; Bh. 16. 19.: तान् क्षिपामि आसुरीषु योनिषु; Hit. 79. 10.: भृत्ये दोषान् क्षिपति; Bhar. 1. 93.: अमी ... दृष्टिपाताः किङ् क्षिप्यन्ते· - दारुणया वाचा क्षेप्तुम् acriter increpare *alqm.* Man. 8. 270. 2) prosternere, dejicere. Lass. 53. 5.: क्षेप्तुन् तपस् तस्य महात्मनः· 3) dimittere. Up. 34.: तेन क्षिप्ता· (Cf. क्षप्, unde fortasse क्षिप्, attenuato अ in इ; lat. *sipo, dissipo*, e *xipo*, abjectâ gutturali; graecum ῥίπ-τω e κρίπτω explicaverim, abjectâ gutturali, et mutatâ sibilante in ρ, v. क्षपस्; cambo-brit. *hipiaw* «to cast or dash suddenly», cujus *h*, ut saepius, respondet sanscritae sibilanti, abjectâ gutturali, sicut in gr. ῥίπτω; fortasse etiam nostrum *werfe*, goth. *vairpa* pro *virpa* - gr. comp. 82. - huc pertinet, transpositis litteris e *vripa* pro *hvripa*, cum *hv* pro क्ष्, sicut *hvas* quis = कस्, gr. comp. 388.).

c. अधि spernere, contemnere. Hit. 83. 16.: वृष दुष्टो देवपादान् अधिक्षिपति; v. क्षिप् praef. आ·

c. अव praef. सम् prosternere, dejicere. Dr. 5. 24.: तं समवाक्षिपत् सा·

c. आ 1) *id. Caus.* आक्षेपयामि facere ut alqs prosternat. Dr. 8. 18.: रथम् आक्षेपयामास गजेन गजयानवित्· 2) spernere, contemnere. Dr. 4. 23.: अवमत्या ऽस्य तद् वाक्यम् आक्षिप्य च; N. 3. 13.: आक्षिपन्तीम् इव प्रभाम् शशिनः स्वेन तेजसा·

c. आ praef. सम् *sicut praec.* 1) prosternere, projicere. Dr. 5. 24.: तया समाक्षिप्तवनुः स पापः पपात· 2) spernere. Mah. 1. 1253.: समाक्षिपन् भानुमतः प्रभाम्·

c. उत् extollere, levare. H. 4. 49.: उत्क्षिप्या ऽभ्रामयद् देहम्; Ragh. 15. 83.